Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 6, June - 2026

DOIs:10.2018/SS/202606016 --:-- Research Paper / Article / Review

आधुनिक कृषि तकनीक तथा कृषि उत्पादकता प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन (जौनपुर जनपद के सन्दर्भ में)

[1] संदीप कुमार यादव, [2] डॉ. शिप्रा राय
[1]शोध छात्र-अर्थशास्त्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, मुफ़्तीगंज, जौनपुर
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, संत कवि बाबा बैजनाथ राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, हरख, बाराबंकी
Email: [1]sandeep13091996yadav@gmail.com, [2]shipra.rai4@gmail.com

सारांश : परंपरागत कृषि में किसान घर के पुराने बीजों का उपयोग करते थे। खाद के रूप में केवल गोबर की खाद (FYM) का प्रयोग होता था। सिंचाई पूरी तरह मानसून या कच्ची नहरों पर निर्भर थी। लागत कम थी, लेकिन जोखिम (कीट, सूखा) अधिक था और उत्पादन केवल परिवार की जरूरतों तक सीमित रहता था। परंपरागत में किसान बैलों से जुताई, हाथ से बुवाई और हंसिये से कटाई करते थे । इसमें समय और शारीरिक श्रम बहुत अधिक लगता था जबकि आधुनिक 'प्रमाणित बीज' (Certified Seeds) और हाइब्रिड बीजों का चलन है। यूरिया/DAP के साथ अब नैनो यूरिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों (Zinc, Boron) का प्रयोग बढ़ा है। ट्रैक्टर, रोटावेटर और कंबाइन हार्वेस्टर ने जौनपुर में श्रम की कमी को दूर किया है। जिस काम में पहले 10 दिन लगते थे, वह अब कुछ घंटों में हो जाता है। तकनीकी यंत्रों और महंगे बीजों के कारण खेती की लागत (Input Cost) बढ़ी है, लेकिन उत्पादन कई गुना बढ़ने से शुद्ध लाभ में वृद्धि हुई है। जनपद जौनपुर में धान का क्षेत्रफल लगभग 2.5–3 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादकता: 2001 में ~2.2 टन/हेक्टेयर → 2024 में ~3.5 टन/हेक्टेयर, गेहूँ का क्षेत्रफल: ~2 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादकता 2001 में ~2.5 टन/हेक्टेयर → 2024 में ~3.8 टन/हेक्टेयर, गन्ना का क्षेत्रफल ~60–70 हजार हेक्टेयर और उत्पादकता 2001 में ~55 टन/हेक्टेयर → 2024 में ~80–85 टन/हेक्टेयर, दलहन (Pulses – अरहर, मसूर, उरद) का जौनपुर जनपद में क्षेत्रफल ~40–50 हजार हेक्टेयर और उत्पादकता स्थिर नहीं, 2001–2024 में ~0.8–1.2 टन/हेक्टेयर है।
मुख्य शब्द: हरित क्रान्ति, सतत कृषि, जौनपुर, सतत कृषि विकास, कृषि उत्पादकता, सामाजिक संतुलन

1.प्रस्तावना :

खाद्यान्नों के पर्याप्त उत्पादन हेतु सरकार ने कृषि क्षेत्र में आधारभूत आर्थिक व तकनीकी परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की और इसके लिए 1966-67 में एक नई कृषि रणनीति को अपनाई गई, जिसे हरित क्रान्ति' का नाम दिया गया। यह रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई के साधनों, मशीनों तथा HYVs के एक पैकेज के रुप में आई। इसे अपनाने के बाद भारतीय कृषि का परंपरागत स्वरूप ही बदल गया। जुताई, बुआई, निराई, मड़ाई, सिंचाई, रख-रखाव आदि सभी का कायाकल्प हो गया। अध्ययन क्षेत्र जौनपुर उत्तर प्रदेश ने भी हरित क्रांति में कृषि उत्पादकता में अपना सहयोग दिया। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था भी कृषि है प्रदेश की कुल जनसंख्या 23.32 करोड़ तथा कुल क्षेत्रफल 2.42 लाख वर्ग किलोमीटर है उत्तर प्रदेश को कृषि की दृष्टि से 9 एग्रो क्लाइमेटिक जोन में विभाजित किया गया है। कृषि क्षेत्र में आय बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है, जिसके लिए विभिन्न प्रकार की योजनाओं के साथ साथ उत्पादन को बढ़ाने तथा उत्पादन लागत कम करने के लिए सरकार प्रयत्नशील है।

अध्ययन क्षेत्र जौनपुर उत्तर प्रदेश में हम हरित क्रान्ति के बाद अपनाई गई प्रमुख कृषि पैटर्न की व्याख्या को निम्नवत रुप से प्रदर्शित करेंगें और कृषि तकनीकी के प्रयोग से कृषि की उत्पादकता में बृद्धि को दर्शाया गया है ।

2.आधुनिक तकनीक और कृषि उत्पादकता

आधुनिक कृषि या खेती का आशय उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न आधुनिक विधियों, आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक खेती तथा अनुप्रयोग को संदर्भित करना है। मानव सभ्यता की उन्नति एवं विकास के लिए खेती को आधुनिक विधियों से जोड़ने की आवश्यकता

है। जिससे उत्पादकता में वृद्धि, पोषणीय खाद्यान्न वाले फसलों में वृद्धि, कृषि और कृषक की उन्नति संभव हो सके। अधिकांश सर्वेक्षणों के अनुसार 2030 तक खाद्य मांगों में 25% की वृद्धि की संभावना है, जबकि यह बढ़कर 2050 तक 70% होने की उम्मीद है। आधुनिक खेती ही एक अच्छा साधन है, जिससे खाद्य मांग को पूरा किया जा सकता है। औद्योगिक क्रांति से पहले उत्तर प्रदेश एवं भारत के ज्यादा अधिकांश लोग दैनिक आवश्यकताओं जैसे भोजन, कपड़े, सूत,जीवन आश्रय के लिए खेतों पर निर्भर थे। उनके पास वैश्विक बाजार की अवधारणा बहुत कम थी। पारंपरिक खेती प्रणाली का प्रयोग होने के कारण उत्पादन कम, लागत और परिश्रम ज्यादा था। उत्तर प्रदेश के अंतर्गत जौनपुर जिला में भी पारंपरिक खेती में ज्यादातर मोटे अनाज जैसे बाजरा मक्का जौ, कोदो, बेर्रा, तथा अन्य फसलों में मटर, गाजर, चना, मूली, कंद जैसी फसलों का उत्पादन होता था। जबकि आधुनिक या जैविक खेती के तरीकों के उपयोग के कारण आज उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। कृषि यंत्रों सिंचाई की व्यवस्था उर्वरक की उपयोगिता कृषि के आधुनिक प्रणालियों के कारण भारत आज विश्व के देशों में कृषि उत्पादन में शीर्ष पर पहुंच चुका है ।

कृषि को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहल Government initiatives to promote agriculture

भारत सरकार द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में कृषि को बढ़ावा देने वाली बिभिन्न सरकारी योजनाओं का सञ्चालनकर रही है, जिसका उद्देश्य गेहूं, चावल और दालो के उत्पादन को बढ़ावा देना, खाद्यान्नों में देश को आत्मनिर्भरता प्रदान करना, सिंचाई के बुनियादी ढाँचे में सुधार करना, जैविक खेती को बढ़ावा देना, कुशल जल प्रबंधन को बेहतर बनाना, कृषि भूमि की मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाना, कृषि उत्पादकता में सुधार लाना और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत प्राकृतिक आपदाओं, कीड़ों या बीमारियों के कारण फसल के खराब होने पर किसानों को सहायता के रूप में वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना, नागरिकों को खाद्य सुरक्षा, कृषि उत्पाद विपणन सुनिश्चित करना है। भारतीय कृषि के आधुनिकीकरण के लिए एआई (AI), आईओटी (IoT), ड्रोन और मृदा मानचित्रण जैसी तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। सरकार द्वारा संचालित प्रमुख योजनाएं निम्न है- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM), राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA), प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY), परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY), मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (SHC), प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY), ई-नाम, e-NAM (राष्ट्रीय कृषि बाजार), प्रधानमंत्री-किसान योजना (PM&KISAN Scheme), कृषि अवसंरचना कोष (AIF), डिजिटल कृषि मिशन (DAM)

आधुनिक कृषि यंत्रो के वितरण

अध्ययन क्षेत्र जौनपुर उत्तर प्रदेश में किसानों द्वारा आधुनिक कृषि यंत्रो का उपयोग किया जा रहा है, जिसके लिए सरकार भी कृषि यंत्रो पर सब्सिडी प्रदान कर रही है कृषि केंद्र बक्शा एवं जौनपुर केंद्र, कृषि में उत्पादकता बढ़ाने के अपनी जिम्मेदारी का निर्बहन बखूबी कर रहे है अध्ययन क्षेत्र जौनपुर जिले की कृषि परिस्थितियों (गेहूं, धान, और विशेषकर मक्के की प्रमुखता) को देखते हुए यहाँ उपयोग होने वाले कृषि यंत्रों की सूची को उनके कार्यों तथा आधुनिक विधिओ का उल्लेख गया है, जिसका उपयोग आज जौनपुर के किसान कर रहे है। इनमें से अधिकांश यंत्रों पर उत्तर प्रदेश कृषि विभाग द्वारा 40% से 80% तक का अनुदान (Subsidies) दिया जाता है। उत्तर प्रदेश कृषि विभाग द्वारा जौनपुर जिले में कृषि यंत्रों के वितरण और सब्सिडी (अनुदान) की प्रक्रिया "पारदर्शी किसान सेवा योजना" (upagriculture.com) पोर्टल के माध्यम से संचालित की जाती है। जौनपुर जिले के संदर्भ में कृषि यंत्रों का विवरण, योजनाएं और डेटा प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित मुख्य बिंदु महत्वपूर्ण हैं-

- **जुताई के कृषि यन्त्र-** कल्टीवेटर (Cultivator), रोटावेटर (Rotavator), डिस्क हैरो (Disc Harrow), लेजर लैंड लेवलर (Laser Land Leveler)
- **बुवाई के कृषि यन्त्र**- सीड ड्रिल (Seed Drill), जीरो टिल सीड ड्रिल (ZeroTill Seed Drill), मल्टी-क्रॉप प्लानटर (Multi-Crop Planter), पैडी ट्रांसप्लांटर (Paddy Transplanter)

गेहूं और अन्य अनाज की लाइनों में बुवाई के लिए।

बिना जुताई के गेहूं की बुवाई के लिए।

- **सिंचाई के यंत्र-** छोटे व सीमान्त किसान भी पम्पिंग सेट का प्रयोग करना शुरू कर दिए और वर्तमान में डीजल व विद्युत पम्पसैट के प्रयोग के साथ आधुनिक तकनीकि जैसे सोलर पंप, ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर से जौनपुर के अधिकांश किसान सिंचाई कर रहे है जिससे उत्पादकता में बृद्धि हुई हैं

Solar Pump
• पीएम-कुसुम योजना के तहत 2HP से 10HP तक के पंप। मुफ्त बिजली से दिन में सिंचाई (पीएम-कुसुम)।

स्प्रिंकलर (Sprinkler)
गेहूं और सरसों जैसी फसलों में छिड़काव विधि से सिंचाई के लिए।

ड्रिप इरिगेशन (Drip Irrigation): जौनपुर की मिर्च, परवल और केला जैसी नकदी फसलों के लिए। खेत में बिछी हुई काली पतली पाइपें जिनसे पानी बूंद-बूंद गिरता है।

- **फसल सुरक्षा और प्रबंधन**
  I. बैटरी/पावर स्प्रेयर (Battery/Power Sprayer)- कीटनाशकों के छिड़काव के लिए
  II. कृषि ड्रोन (Agriculture Drone)- नैनो यूरिया और कीटनाशकों के हवाई छिड़काव के लिए (यह जौनपुर में नई तकनीक के रूप में उभर रहा है)। 6 या 8 पंखों वाला बड़ा रोबोटिक उड़न खटोला, जिसके नीचे लिक्विड टैंक होता है। मक्के और गन्ने पर नैनो यूरिया का छिड़काव।
- **कटाई और मड़ाई के लिए-**
  I. कंबाइन हार्वेस्टर (Combine Harvester)- गेहूं और धान की बड़े स्तर पर कटाई और मड़ाई के लिए।
  II. मक्का थ्रेशर/शेलर (Maize Sheller)- जौनपुर में मक्के के दानों को अलग करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यंत्र। मक्का शेलर एक बड़ी मशीन जिसमें ऊपर से मक्का डाला जाता है और एक तरफ से दाने निकलते हैं। जौनपुर में मक्के के दानों को अलग करने के लिए।
  III. मल्टी-क्रॉप थ्रेशर- गेहूं, सरसों और मटर की मड़ाई के लिए।
  IV. रीपर कम बाइंडर (Reaper Binder)- गेहूं की कटाई कर उसे बंडल बनाने के लिए।
- **फसल अवशेष प्रबंधन (Residue Management - पराली प्रबंधन)-** पहले जहाँ फसल अवशेष का प्रयोग पशु-चारा व देशी खाद बनाने में प्रयोग किया जाता था। वहीं आज के समय में इसे खेत में ही जलाकर नष्ट करने का कार्य किया जाने लगा है। पराली जलाने के कारण पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य और कृषि के लिए कई गंभीर समस्याओं को बढ़ावा दिया है।
  1. **सुपर सीडर (Super Seeder)-** धान की पराली खड़े रहते ही गेहूं की बुवाई करने के लिए।
  2. **स्ट्रॉ रीपर (Straw Reaper)-** गेहूं की कटाई के बाद बचे डंठल से भूसा बनाने के लिए।
  3. **मल्चर (Mulcher) और कटर-** फसल अवशेषों को छोटे टुकड़ों में काटकर मिट्टी में मिलाने
- **आधुनिक तकनीक (Modern Technology)-** एरोपोनिक्स प्रणाली, एक्वापोनिक्स प्रणाली, हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली, मोनोकल्चर प्रणाली
- **रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों पर निर्भरता-** भारत में हरित क्रान्ति के पहले जहाँ परंपरागत खेती के अंतर्गत गोबर व देशी खादों का प्रचलन अधिक था, वहीं हरित क्रान्ति के बाद धीरे-धीरे रासायनिक खादों के उपयोग का चलन बढ़ता गया। यही कारण है कि आजकल कृषि को रासायनिक कृषि की संज्ञा दी जाती है।

- **उन्नतशील बीजों का प्रयोग-** नई कृषि तकनीकों का उपयोग, रासायनिक ग्रेड और कृषि में उच्च उपज देने वाले उन्नतशील बीजों (HYVs- High-Yielding Varieties) के उपयोग की शुरुआत हुई, जिसने पूर्व में चल रही पारंपरिक खेती की तस्वीर को बदल दिया। इससे देश में खाद्यान्न उत्पादन में कई गुना वृद्धि देखने को मिला और भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर होता गया।

3.खाद्यान्न उत्पादन में जौनपुर जनपद की भूमिका

जौनपुर (उत्तर प्रदेश) के संदर्भ में टिकाऊ कृषि और आधुनिक तकनीक का प्रयोग अत्यंत प्रासंगिक है। जौनपुर मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान जिला है, जो मध्य गंगा के मैदानी इलाके में स्थित है। यहाँ की मिट्टी मुख्य रूप से दोमट और बलुई दोमट (Loamy Soil) है। यहाँ गोमती और सई जैसी नदियाँ बहती हैं। जौनपुर को पूर्वांचल में 'मक्के का कटोरा' भी कहा जाता है। मक्के की फसल काफी ऊंची होती है, जिसमें कीटनाशकों का छिड़काव हाथ से करना मुश्किल होता है। यहाँ ड्रोन छिड़काव अत्यंत प्रभावी हो सकता है, जिससे लागत कम होगी और रसायनों का असर सीधा कीटों पर होगा। जौनपुर में **गेहूं उत्पादन** 2001 में उत्पादकता लगभग 25.5 क्विंटल/हेक्टेयर थी, जो 2026 तक बढ़कर 38 क्विंटल/हेक्टेयर होने का अनुमान है। इसका मुख्य कारण बेहतर बीज (जैसे- HD 2967, PBW 343), सिंचाई की बेहतर सुविधा और उर्वरकों का सही उपयोग है। जौनपुर में गेहूं का क्षेत्रफल 1.82 लाख से 1.95 लाख हेक्टेयर के बीच बना हुआ है।

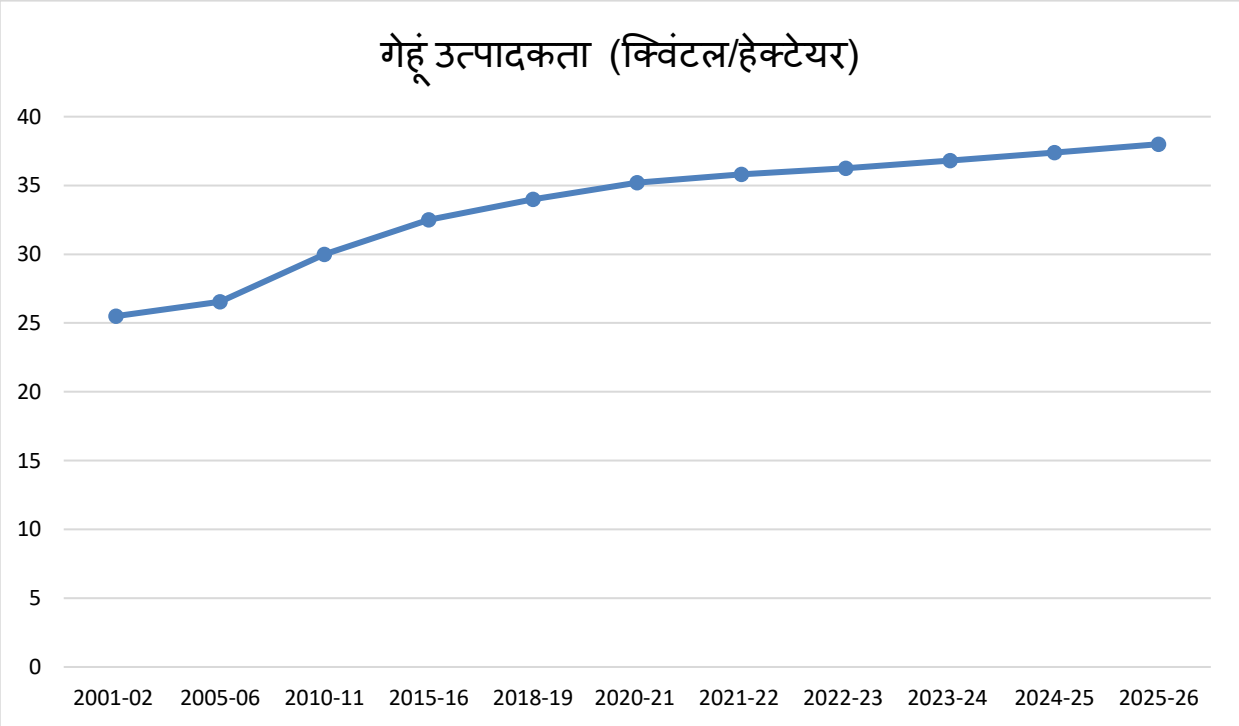

आंकड़ा 1 - जौनपुर जिले में गेहू का वर्षवार एवं उत्पादकता (क्विंटल/हेक्टेयर) का प्रदर्शन

जौनपुर में चावल (धान) खरीफ सीजन की मुख्य फसल है। जिले की गोमती और सई नदियों के कछार और यहाँ की चिकनी दोमट मिट्टी धान की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है। किसानो तथा सरकारी रिपोर्ट अनुसार उत्पादकता जो 2001 में लगभग 19.8 क्विंटल/हेक्टेयर थी, वह 2026 तक 33.5 क्विंटल/हेक्टेयर तक पहुँचने गई है। यह लगभग 70% की वृद्धि को दर्शाता है। जौनपुर में काला नमक (सुगंधित चावल) और मंसूरी किस्मों के साथ-साथ अब हाइब्रिड किस्मों (जैसे- प्रो-एग्रो, अराइज) का प्रयोग बढ़ा है। इसके अलावा, 'स्वर्ण सब-1' जैसी किस्में जो बाढ़ को सह सकती हैं, जिले के निचले इलाकों (जैसे केराकत और जलालपुर) में लोकप्रिय हुई।

जौनपुर के कई विकास खंड के किसानो में (जैसे- मछलीशहर, शाहगंज के किसान) में 'श्री (SRI =System of Rice Intensification) विधि' का प्रचार बढ़ा है, जिसमें कम पानी और कम बीज में अधिक पैदावार होती है।

तालिका 1: जौनपुर जिले में धान (चावल) उत्पादन सांख्यिकी (2001-2026)

वर्ष	क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	कुल उत्पादन (मीट्रिक टन)	उत्पादकता (क्विंटल/हेक्टेयर)
2001-02	1,58,200	3,13,236	19.8
2005-06	1,60,400	3,44,860	21.5
2010-11	1,64,800	3,92,224	23.8
2015-16	1,68,500	4,51,580	26.8
2018-19	1,70,200	4,85,070	28.5
2020-21	1,72,400	5,17,200	30.0
2021-22	1,72,000	5,25,100	30.5
2022-23	1,71,800	5,32,580	31.0
2023-24 (E)	1,72,500	5,48,550	31.8
2024-25 (P)	1,73,800	5,66,588	32.6
2025-26 (P)	1,74,500	5,84,575	33.5

(E = Estimated/अनुमानित, P = Projected/पूर्वानुमान)

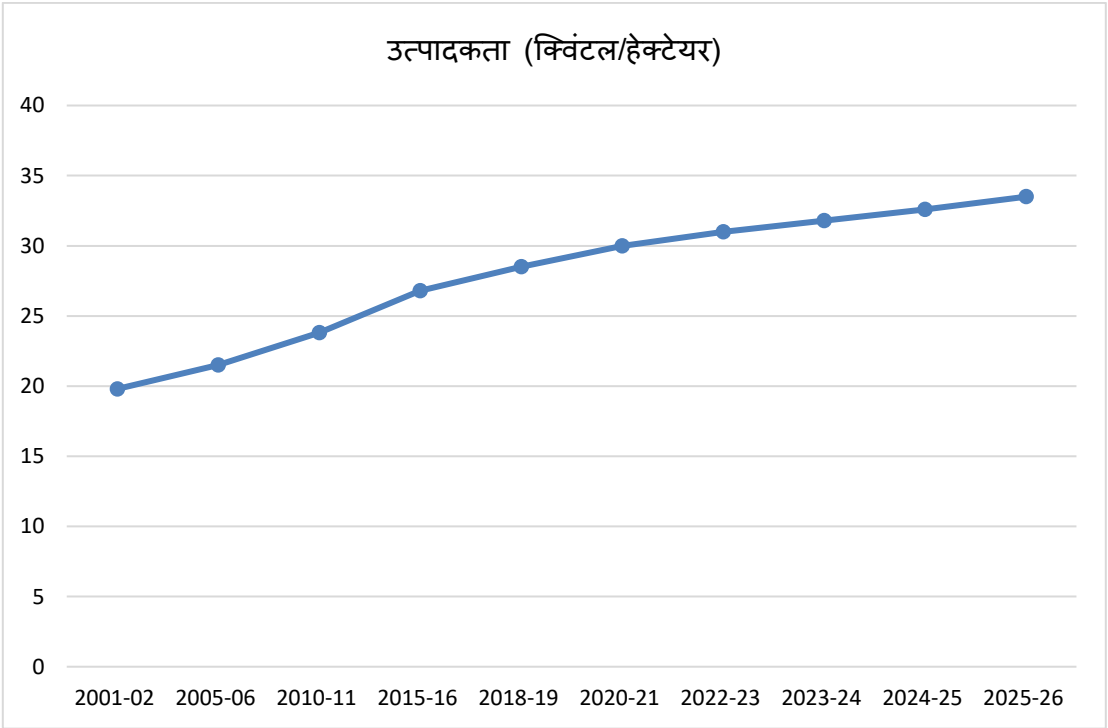

आंकड़ा 2 - जौनपुर जिले में धान (चावल) का वर्षवार एवं उत्पादकता (क्विंटल/हेक्टेयर) का प्रदर्शन

गेंहू, चावल के साथ साथ जौनपुर के लिए मक्का (Maize) केवल एक फसल नहीं, बल्कि इस जिले की कृषि पहचान है। पूर्वांचल में जौनपुर को 'मक्के का कटोरा' कहा जाता है। यहाँ खरीफ के अलावा अब किसानो द्वारा रबी और जायद (बसंतकालीन) मौसम में भी मक्के की खेती बड़े स्तर पर कर रहे है। जौनपुर में मक्का की उत्पादकता में सबसे शानदार वृद्धि देखी गई है। 2001 में जहाँ यह 17.5 क्विंटल थी, वहीं 2026 तक इसके 47 क्विंटल/हेक्टेयर पहुँचने का अनुमान है। इसका मुख्य कारण जौनपुर में 'सिंगल क्रॉस हाइब्रिड' (Single Cross Hybrid) बीजों का बड़े पैमाने पर अपनाया जाना है। पिछले एक दशक में जौनपुर के किसानों ने गेहूं के विकल्प या पूरक के रूप में बसंतकालीन मक्के की खेती शुरू की है। इसकी उत्पादकता खरीफ मक्के से भी अधिक होती है क्योंकि इसमें कीटों का प्रकोप कम और धूप अधिक मिलती है।

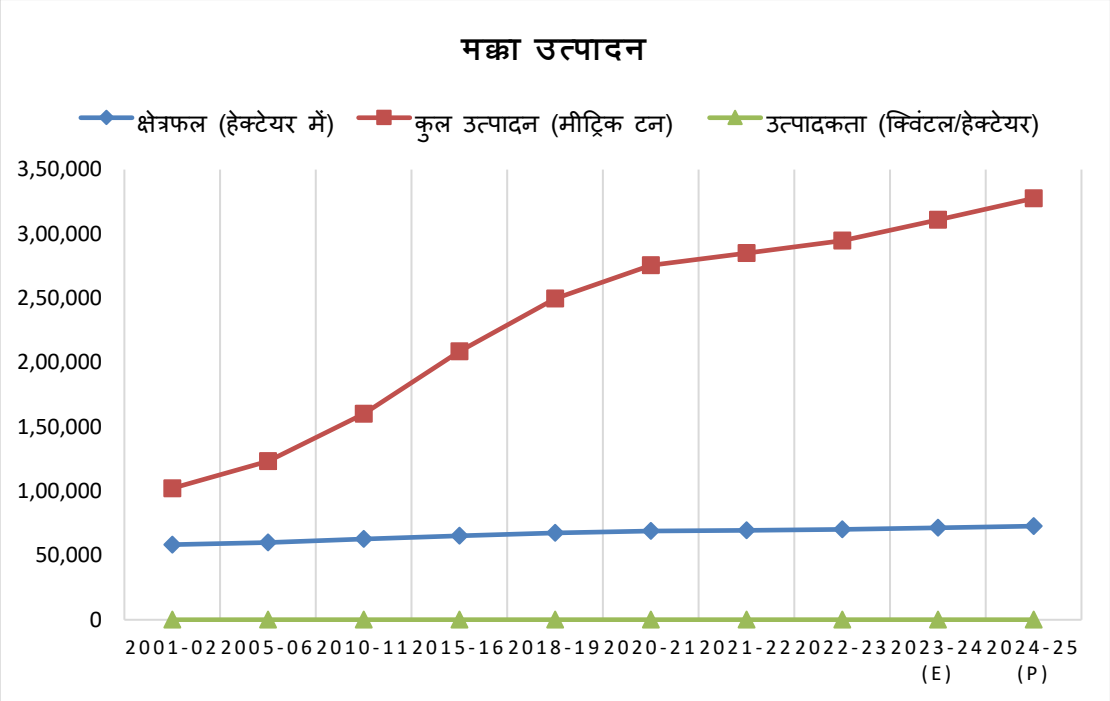

आंकड़ा 3 - जौनपुर जिले में मक्का का वर्षवार एवं उत्पादकता (क्विंटल/हेक्टेयर) का प्रदर्शन

जौनपुर में मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए दलहन का फसल चक्र में बड़ा महत्व है। यहाँ मुख्य रूप से अरहर (खरीफ) और जौनपुर में 'अरहर' की लंबी अवधि वाली किस्मों की जगह अब कम समय वाली किस्में ली जा रही हैं ताकि खेत को अगली फसल के लिए जल्दी खाली किया जा सके। गन्ना जौनपुर के शाहगंज और केराकत क्षेत्रों की मुख्य नकदी फसल है, जबकि आलू पूरे जिले में व्यापक रूप से उगाया जाता है। सरसों को अक्सर गेहूं के साथ 'सह-फसल' (Inter-cropping) के रूप में उगाया जाता है।

फसल	**वर्ष 2001 (उत्पादन - MT)**	**वर्ष 2021 (उत्पादन - MT)**	**वर्ष 2026 (अनुमानित - MT)**	**मुख्य क्षेत्र**
गन्ना	5,20,000	6,80,000	7,50,000	शाहगंज, खुटहन
आलू	1,10,000	2,40,000	3,10,000	बदलापुर, मछलीशहर

यहाँ जौनपुर जिले की प्रमुख फसलों की **2001 से 2024 तक की उत्पादकता का सारांश तालिका रूप में** प्रस्तुत है (टन/हेक्टेयर में औसत अनुमानित आँकड़े):

वर्ष/फसल	**धान (Rice)**	**गेहूँ (Wheat)**	**गन्ना (Sugarcane)**	**दलहन (Pulses)**	**तिलहन (Oilseeds)**
2001	2.2	2.5	55	0.8	1
2005	2.5	2.7	60	0.9	1.1
2010	2.8	3	65	1	1.2
2015	3	3.2	70	1.1	1.3
2020	3.3	3.5	75	1.2	1.4
2024	3.5	3.8	82	1.2	1.5

जौनपुर जिले में कुल **21 विकास खंड (Blocks)** हैं। प्रत्येक ब्लॉक की अपनी भौगोलिक विशेषता और फसल विविधता है। यहाँ सभी ब्लॉकों का कृषि विवरण, उनकी मुख्य फसलें और आधुनिकता के स्तर के आधार पर क्रमवार विवरण दिया गया है-

तालिका 2: जौनपुर जिला: ब्लॉक-वार कृषि प्रोफाइल (21 ब्लॉक)

क्रम	विकास खंड (Block)	मुख्य फसलें	कृषि की स्थिति (परंपरागत बनाम आधुनिक)
1	बदलापुर	मक्का, गेहूं, आलू, मिर्च	अत्यधिक आधुनिक: यहाँ मक्के और मिर्च की खेती में मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई का व्यापक प्रयोग हो रहा है।
2	महराजगंज	मक्का, धान, अरहर	संक्रमणकालीन: यहाँ के किसान अब परंपरागत बीजों को छोड़ हाइब्रिड मक्के की ओर बढ़ रहे हैं।
3	सुइथाकला	धान, गेहूं, केला	आधुनिक: यहाँ केले की खेती (टिश्यू कल्चर) और सोलर पंपों का प्रयोग बढ़ा है।
4	खुटहन	गन्ना, गेहूं, मक्का	मिश्रित: यहाँ गन्ने की खेती परंपरागत है, लेकिन गेहूं की बुवाई मशीनों (सीड ड्रिल) से हो रही है।
5	शाहगंज (सोंधी)	गेहूं, गन्ना, आलू, सब्जी	अत्यधिक आधुनिक: आलू और सब्जी के लिए यहाँ बड़ी संख्या में कोल्ड स्टोरेज और आधुनिक यंत्र मौजूद हैं।
6	बक्शा	धान, गेहूं, मक्का	तकनीकी केंद्र: यहाँ 'कृषि विज्ञान केंद्र' होने के कारण नई तकनीकों का परीक्षण सबसे पहले होता है।
7	मछलीशहर	धान, दलहन, गेहूं	मिश्रित: यहाँ 'जीरो टिल सीड ड्रिल' से गेहूं की बुवाई काफी लोकप्रिय है।
8	मुगराबाद शाहपुर	मक्का, धान, सब्जी	आधुनिक: यहाँ व्यावसायिक मक्का उत्पादन और सब्जी निर्यात के लिए आधुनिक मंडियों का उपयोग होता है।
9	सुजानगंज	धान, गेहूं, सरसों	परंपरागत: यहाँ अभी भी सिंचाई के लिए नहरों और परंपरागत तरीकों पर निर्भरता अधिक है।
10	बरसठी	अरहर, चना, गेहूं	दलहन केंद्र: यहाँ दलहन की खेती में 'एकीकृत कीट प्रबंधन' (IPM) जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग शुरू हुआ है।
11	मड़ियाहूँ	धान, मक्का, तिलहन	संक्रमणकालीन: यहाँ ऊसर भूमि सुधार के बाद अब आधुनिक धान की किस्में उगाई जा रही हैं।
12	रामनगर	गेहूं, धान, मक्का	मिश्रित: यहाँ पशुपालन के साथ-साथ चारे के लिए आधुनिक मक्के की खेती
13	रामपुर	धान, गेहूं, सब्जी	आधुनिक: वाराणसी सीमा के पास होने के कारण यहाँ सब्जियों का आधुनिक व्यावसायिक उत्पादन होता है।
14	जलालपुर	धान, सब्जी, गेहूं	यहाँ गोमती नदी के किनारे सब्जी उत्पादन में जैविक खाद और रसायनों का संतुलित उपयोग हो रहा है।
15	केराकत	धान, गन्ना, गेहूं	यहाँ गन्ना उत्पादन में आधुनिक 'ट्रेंच विधि' अपनाई जा रही है।
16	डोभी	धान, गेहूं, मक्का	यहाँ खेती का तरीका अभी भी काफी हद तक मानसून और पुराने फसल चक्र पर आधारित है।
17	मुफ्तीगंज	गेहूं, मक्का, सरसों	यहाँ सरसों की उन्नत किस्मों और छोटे कृषि यंत्रों का प्रसार बढ़ा है।
18	धर्मापुर	सब्जी (मूली), धान	जौनपुरी मूली का मुख्य केंद्र है, अब आधुनिक वर्मीकम्पोस्ट का प्रयोग बढ़ रहा है।
19	सिरकोनी	सब्जी, अमरूद, गेहूं	अमरूद के पुराने बागों को आधुनिक 'कैनोपी मैनेजमेंट' से सुधार

20	सिकरारा	मक्का, गेहूं, धान	मक्का उत्पादन में 'ड्रोन' के प्रयोग का सफल परीक्षण
21	करंजाकला	धान, गेहूं, सब्जी	जौनपुर शहर के पास होने के कारण यहाँ 'सटीक खेती' (Precision Farming) के जरिए ताजी सब्जियों का उत्पादन होता है।

4.निष्कर्ष :

परंपरागत कृषि में किसान घर के पुराने बीजों का उपयोग करते थे। खाद के रूप में केवल गोबर की खाद (FYM) का प्रयोग होता था। सिंचाई पूरी तरह मानसून या कच्ची नहरों पर निर्भर थी। लागत कम थी, लेकिन जोखिम (कीट, सूखा) अधिक था और उत्पादन केवल परिवार की जरूरतों तक सीमित रहता था। परंपरागत में किसान बैलों से जुताई, हाथ से बुवाई और हंसिये से कटाई करते थे । इसमें समय और शारीरिक श्रम बहुत अधिक लगता था जबकि आधुनिक 'प्रमाणित बीज' (Certified Seeds) और हाइब्रिड बीजों का चलन है। यूरिया/DAP के साथ अब नैनो यूरिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों (Zinc, Boron) का प्रयोग बढ़ा है। ट्रैक्टर, रोटावेटर और कंबाइन हार्वेस्टर ने जौनपुर में श्रम की कमी को दूर किया है। जिस काम में पहले 10 दिन लगते थे, वह अब कुछ घंटों में हो जाता है। तकनीकी यंत्रों और महंगे बीजों के कारण खेती की लागत (Input Cost) बढ़ी है, लेकिन उत्पादन कई गुना बढ़ने से शुद्ध लाभ (Net Profit) में वृद्धि हुई है।

संदर्भ सूची :

1. कृष्णस्वामी, के. एस. (1994):"नई आर्थिक व्यवस्था के अंतर्गत कृषि विकास", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXIX, संख्या 26, 25 जून, पृष्ठ-A65-A71
2. अनीता शाह, ए. (1997): "खाद्य सुरक्षा और प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंचः हाल के रुझानों की समीक्षा", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXXII, संख्या 26, 28 जून, पृष्ठ-A46-A54
3. देसाई, एम. भूपति (2002): "कृषि विकास को पुनर्दिशित करने हेतु नीतिगत ढांचा", भारतीय कृषि अर्थशास्त्र पत्रिका इंडियन, खंड 57, संख्या 1, जनवरी-मार्च, पृष्ठ-1-21
4. महेंद्र, देव एस. (2002): "कृषि और ग्रामीण रोज़गार पर साहसिक पहल की आवश्कता", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXXVII, अंक 12, 23 मार्च, पृष्ठ 1088-91
5. राव, वी. एम. और डी. वी. गोपालोप्पा (2004): "कृषि विकास और किसान संकट -कर्नाटक से एक संभावित दृष्टिकोण", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXXIX, अंक 52, 25 दिसंबर, पृष्ठ 5607-10.
6. शेखर, सी. एस. सी. (2004): "अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय बाजारों में कृषि मूल्यों में अस्थिरता", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXXIX, संख्या 43, 28 अक्टूबर, पृष्ठ 4729-36।
7. कुमार, पी. और रमेश चंद (2004): "पूंजी निर्माण और कृषि विकास के निर्धारक- कुछ नए अन्वेषण", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड XXXIX, अंक 52, 25 दिसंबर, पृष्ठ 5611-16.
8. जौनपुर जिला सांख्यिकीय पत्रिका-2024, तालिका - 4 तथा Jaunpur.nic.in (जौनपुर जिले की सरकारी वेबसाइट)
9. पुरी, वी० के० एन्ड मिश्र, ए०के० (2018): भारतीय अर्थव्यवस्था, पृष्ठ सं. 101
10. एक जनपद एक उत्पाद (ओडीओपी), जौनपुर, उ० प्र० की आधिकारिक वेबसाइट तथा जौनपुर, नियोजित विकास के बढ़ते कदम (2020), जिला सूचना और सम्पर्क विभाग, जौनपुर
11. http:/www.jaunpur.nic.in (जौनपुर जिले की सरकारी वेबसाइट)